International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 1, Jan.-Feb., 2025

सूरदास का महाकाव्य कला–पक्ष की दृष्टि में

डॉ. अन्जु अवस्थी

हिन्दी विभाग, जय नारायण व्यास, विश्वविद्यालय, जोधपुर

सारांश

संत सूरदास की गिनती सोलहवीं शताब्दी के महान भक्त कवि और संतों में होती है इनके काव्यों को महाकाव्यों के रूप में जाना जाता है जिन्हें भाव पक्ष और कला पक्ष के रूप में विभाजित किया गया है। इनके महाकाव्य को कला पक्ष की दृष्टि में यहाँ उल्लेखित किया गया है, जिसमें काव्य की सरलता प्रवाह, संगीतमयता, रचनात्मकता, भावुकता, भक्ति एवं अलंकारों के प्रयोग का वर्णन किया गया है। भावों की अभिव्यक्ति को देखते हुए इनके काव्यों में कृष्ण भक्ति को साधारण जन की जुबान में समा जाने वाली लय की मिठास घोलने वाला दर्शाया गया है।

मूल शब्द : काव्य, कला पक्ष, मनमोहक, भक्ति, अलंकार

सूरदास (संत सूरदास) 16वीं शताब्दी के महान भक्त कवि और संत थे, जो हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवियों में से एक माने जाते हैं। उनका जन्म लगभग 1478 ई. में उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के एक गाँव ''रेनुका'' में हुआ था। कुछ स्रोतों के अनुसार उनका जन्म मथुरा में भी हुआ था। कुछ लोगों का मानना है कि सूरदास जी का जन्म बहुत समय पहले सीही नामक गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था। बाद में वे गऊघाट नामक स्थान पर चले गए, जो आगरा और मथुरा नामक दो शहरों के बीच है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल नामक एक विद्वान व्यक्ति ने बताया कि सूरदास का जन्म एक विशेष कैलेंडर के अनुसार 1540 ई. के आस–पास हुआ था और उसी कैलेंडर के अनुसार 1620 ई. के आसपास उनकी मृत्यु हुई थी। सूरदास का वास्तविक नाम सूरनाथ था, लेकिन वे सूरदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे जन्म से अंधे थे, जिससे उनके जीवन की कठिनाइयाँ और बढ़ गईं, लेकिन इस कठिन परिस्थिति ने उनके कृष्ण भक्ति में समर्पण को और भी प्रगाढ़ किया। सूरदास की मृत्यु के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं है, लेकिन यह माना जाता है कि उन्होंने 1583 इ. के आसपास इस संसार को छोड़ दिया (प्रीति झा, 2013)। वे अपने जीवन में कृष्ण भक्ति के परम पुजारी रहे और उनका जीवन एक अमिट छाप छोड़ गया (विलियम्स, 1979)।

सूरदास के महाकाव्य की खोज सूर परम्परा के विकास के माध्यम से की गई है, जिसमें उनकी विनय कविता में मौखिक चिह्न और रचनात्मक गणना पर जोर दिया गया है। उनका काम कृष्ण की कथाओं के साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाता है, जिसमें आध्यात्मिक भक्ति के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति का मिश्रण है सजीव रूपकों और उपमाओं का प्रयोग उनकी कविता के संवेदनात्मक

अनुभव को बढ़ाता है। सूरदास ने एक गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है जो कृष्ण के चंचल और शरारती स्वभाव को पकड़ती है, जिससे दिव्यता जुड़ जाती है (हॉले, 2005)।

सोलहवीं शताब्दी में मथुरा के पुनरुद्धार ने स्थानीय पौराणिक कथाओं को व्यापक आध्यात्मिक विषयों के साथ जोड़कर सूरदास की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान की (विलियम्स, 1979)।

उनका काम उनके समय की सामाजिक–धार्मिक गतिशीलता को दर्शाता है, जो भक्ति आंदोलन की सांस्कृतिक पहचान मे योगदान देता है (मिश्रा, 1998)।

सूरदास का जीवन और काव्य कृष्ण भक्ति पर आधारित था। उन्ह श्री कृष्ण के बाल रूप और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित रचनाएँ लिखने के लिए जाना जाता है। सूरदास ने अपनी आँखों की रोशनी बचपन में खो दी थी, जिसके बाद उन्होंने पूरी तरह से भगवान श्री कृष्ण के प्रति भक्ति में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका प्रमुख उद्देश्य कृष्ण भक्ति के माध्यम से मानवता को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना था। सूरदास की शिक्षा का अधिक विवरण नहीं मिलता, लेकिन यह माना जाता है कि वे संत और गुरु वल्लभाचार्य के शिष्य थे, जो श्री कृष्ण की भक्ति में विश्वास रखते थे। उनके साथ बिताए गए समय ने सूरदास की भक्ति को और भी गहरा किया और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से कृष्ण के प्रति अपनी अव्यक्त भक्ति को व्यक्त किया। सूरदास का काव्य भारतीय भक्ति साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी कविताओं ने न केवल भक्तों को प्रेरित किया, बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी यह काव्य रूपान्तरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। उनका भक्ति मार्ग और कृष्ण प्रेम आज भी लोगों के दिलों में जीवित है।

कला–पक्ष की दृष्टि :
सूरदास के काव्य का कला–पक्ष उनकी कविता के साहित्यिक और कलात्मक गुणों से संबंधित है। यह पक्ष उनके काव्य की संरचना, लय, ध्वनि, भाषा, अलंकारों और अन्य कलात्मक विशेषताओं का निरूपण करता है।

- **काव्य की सरलता और प्रवाह :** सूरदास का काव्य अत्यंत सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण था। उनका उद्देश्य आम जनता तक भगवान श्री कृष्ण की भक्ति का संदेश पहुँचाना था, इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में कठिन शास्त्रों की जटिलताओं से बचते हुए, साधारण और सहज भाषा का प्रयोग किया। उनका काव्य इतना प्रवाहमयी और सजीव था कि पाठक या श्रोता इसे आसानी से समझ सकता था और इसके भावों में डूब सकता था।
- **संगीतमयता :** सूरदास के काव्य में राग और तान का विशेष प्रभाव है। उनकी कविताएँ गीतात्मक होती हैं, जिनमें संगीत का अत्यधिक महत्व है। वे विशेष रूप से पद्य रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, जो गायन में संगीतमय आनंद प्रदान करती हैं। उनकी रचनाएँ भक्ति गीतों की तरह गाई जाती थीं, और इन गीतों में ताल और लय का सामंजस्य इतना अच्छा होता था कि यह सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता था। उनके काव्य में गहरे भावनात्मक तत्वों के साथ–साथ संगीत और ताल का सन्तुलन अद्वितीय था, जिससे उनकी रचनाएँ और भी आकर्षक बन जाती थीं।

- **रचनात्मकता** : सूरदास की रचनाएँ न केवल साधारण भक्तिरचनाएँ हैं, बल्कि इनमें कल्पना और रचनात्मकता का भी अद्वितीय प्रयोग है। उनका शब्द चयन, भाषा की सजीवता और चित्रात्मकता कला–पक्ष के मुख्य तत्व हैं।
- **अलंकारों का प्रयोग** : सूरदास ने अपनी रचनाओं में अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है, जैसे अनुप्रास (समान ध्वनि), उत्प्रेक्षाएँ, रूपकों आदि जो काव्य की सुगमता और सौंदर्य को बढ़ाते हैं।
- **भावनाओं की गहराई** : सूरदास ने भावनाओं को इतनी गहरी और सजीव तरीके से व्यक्त किया कि पाठक या श्रोता अपने भीतर उनकी भावनाओं को महसूस कर सकते हैं। उनकी कविता में सरलता और शुद्धता है, जो भारतीय काव्य की कला का अद्वितीय उदाहरण है।
- **भावुकता और नाद** : सूरदास का काव्य भावुकता से भरा हुआ था, जिसमें उनकी गहरी श्रद्धा और प्रेम व्यक्त होता था। कृष्ण और राधा के प्रति उनकी भक्ति की भावना में न केवल धार्मिक समर्पण था, बल्कि उसमें सजीव प्रेम और आत्मीयता की गहरी भावना भी समाहित थी। उनके गीतों में एक तरह की लयबद्धता (Rhythm)और संगीत की झंकार होती थी, जो उन्हें न केवल काव्य बल्कि संगीत के रूप में भी एक महान कार्य बना देती है।
- **भक्ति और कला का मेल** : सूरदास का महाकाव्य एक अद्‌भुत भक्ति और कला का मिश्रण था। वे कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति को काव्य के रूप में व्यक्त करते थे, लेकिन उनका काव्य कला के सर्वोत्तम रूपों में से एक था। उनके गीतों और कविताओं में एक विशेष संगीतात्मकता और काव्यात्मक लय थी जो किसी भी महान काव्य रचना की विशेषता होती है। सूरदास ने कृष्ण भक्ति को इतना सुंदर रूप दिया कि यह काव्य कला के रूप में न केवल एक धार्मिक अनुभव, बल्कि एक साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर बन गई।
- **साहित्यिक रूप और शिल्प** : सूरदास की रचनाओं में कवि की गहरी काव्य शिल्पकला झलकती है। वे विशेष रूप से पद्य (छंद) के शास्त्रीय रूपों में निपुण थे। उनकी कविताओं में दोहा, चौपाई, गीतिका, और सोरठा जैसे विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग हुआ, जो उन्हें एक पूर्ण काव्यात्मक कलाकार के रूप में स्थापित करते हैं। उनके काव्य का शिल्प सटीक और प्रभावशाली था, जो पाठकों पर गहरी छाप छोड़ता था।
- **लोकप्रियता और सांस्कृतिक प्रभाव** : सूरदास के महाकाव्य का प्रभाव न केवल साहित्यिक बल्कि सांस्कृतिक भी था। उनके गीतों और कविताओं ने न केवल धार्मिक क्षेत्र में बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी गहरी छाप छोड़ी। उनकी काव्य रचनाएँ भारतीय लोक संगीत का हिस्सा बन गई और आज भी धार्मिक आयोजनों और संगीत कार्यक्रमों में गाई जाती हैं।

काव्य की सरलता और प्रवाह :

सूरदास का काव्य हिंदी साहित्य में अपनी विशेष सरलता और प्रवाह के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। उनके काव्य में गहरी भक्ति और प्रेम की भावना तो थी ही, साथ ही उसकी भाषा और शैली ने उसे एक लोकप्रिय और सर्वजनप्रिय काव्य बना दिया। सूरदास ने अपने काव्य में जो सरलता और प्रवाह की विशेषताएँ उत्पन्न की, वे उनकी रचनाओं को अधिक सुलभ, प्रभावी और पाठकों के दिलों में समाहित होने योग्य बनाती है।

सरलता का तत्व :

सूरदास का काव्य मुख्यत : हिन्दी भाषी जनता के लिए था, इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया। वे शास्त्रों की जटिलताओं से बचते हुए ऐसो भाषा का प्रयोग करते थे, जिसे आम लोग आसानी से समझ सकें। सूरदास का उद्देश्य था कि उनके काव्य का संदेश और भावनाएँ हर किसी तक पहुँच सकें, चाहे वह कोई साधु संत हो या सामान्य जन इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया, जिससे उनके गीत और कविताएँ हर वर्ग के लोगों के बीच लोकप्रिय हो सकीं।

भावनाओं की सरल अभिव्यक्ति :
सूरदास के काव्य में एक ऐसी सरलता थी जो न केवल शब्दों की दृष्टि से बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति में भी साफ और स्पष्ट थी। उन्होंने कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति, राधा के प्रति प्रेम, और भक्तों के आत्मसमर्पण को सहजता से व्यक्त किया। उनकी कविताओं में न कोई ओझल भाषा थी, न ही कोई घुमावदार विचार । उनकी भावनाएँ सीधी और निष्कलंक थी, जो पाठकों और श्रोताओं को सीधे अपने भीतर प्रवेश करने के लिए प्रेरित करती थी।

प्रवाह और लय :
सूरदास का काव्य एक विशेष प्रवाह और लय में बन्धा हुआ था। उनके काव्य की भाषा में एक तरह की लयबद्धता थी, जो उसे संगीतात्मक बनाती थी। सूरदास की रचनाएँ गाने योग्य होती थीं, और उनके पदों का संगीतात्मक स्वरूप भक्ति गीतों के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। यही प्रवाह और लय उनकी कविताओं को अधिक प्रभावी और मनमोहक बनाता था। उनका काव्य एक गति में बहता था, जो श्रोताओं को अपने साथ वहा ले जाता था और वे कृष्ण की लीलाओं और भक्ति में खो जाते थे।

साधारण जन की जुबान :
सूरदास ने अपनी कविताओं में वही भाषा और शब्दावली इस्तेमाल की, जो आम जन के बीच प्रचलित थी। उन्होंने लोक बोलचाल की भाषा का उपयोग किया, जिससे उनके गीत और कविताएँ जनमानस में आसानी से समा गईं। उनका काव्य न केवल शास्त्रों और ग्रंथों से लिया गया था, बल्कि यह जीवन के साधारण सीधे और वास्तविक पहलुओं को भी उजागर करता था। सूरदास के गीतों में जीवन की सरलता और कृष्ण के प्रति एक सच्चे भक्त का प्रेम था।

राधा–कृष्ण के प्रेम का सरल चित्रण :
सूरदास के काव्य में कृष्ण और राधा के प्रेम का चित्रण एकदम सरल और स्वाभाविक रूप में किया गया है। उन्होंने कृष्ण के साथ राधा के सम्बन्ध को बहुत सहजता से चित्रित किया, जो सामान्य मनुष्य की भावनाओं से जुड़ा हुआ था। उनकी कविताओं में राधा–कृष्ण के संवाद, प्रेम, तकरार और मिलन की भावनाएँ इतनी सरल और स्पष्ट हैं कि वे हर पाठक को अपने साथ जोड़ लेती हैं। सूरदास ने इस प्रेम को तात्त्विक जटिलताओं में नहीं उलझाया, बल्कि इसे एक सहज, निःस्वार्थ प्रेम के रूप में प्रस्तुत किया।

संगीतात्मक प्रवाह :

सूरदास का काव्य केवल साहित्यिक काव्य तक सीमित नहीं था, बल्कि वह संगीत की दुनिया में भी उतना ही प्रभावी था। उनके गीतों में संगीत और काव्य का अदभुत संगम था। सूरदास ने अपने काव्य में जो प्रवाह और लय पैदा की, वह न केवल कविता में बल्कि संगीत में भी स्पष्ट रूप से महसूस किया जाता था। उनके गीत भक्तों द्वारा गाए जाते थे और उनका संगीतात्मक प्रवाह सुनने वालों को कृष्ण की भक्ति में समाहित कर देता था।

निष्कर्ष

सूरदास एक ऐसे कवि थे जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से कृष्ण भक्ति को आम जनता तक पहुँचाया और भारतीय समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता पैदा की। वे न केवल एक महान संत थे, बल्कि एक अद्वितीय कवि भी थे, जिनकी रचनाएँ आज भी सृजनात्मकता और भक्ति के प्रतीक के रूप में जानी जाती हैं। उनका काव्य आज भी लोगों के दिलों में जीवित है, और उनकी भक्ति गीतों के माध्यम से कृष्ण के प्रति गहरी श्रद्धा और समर्पण की भावना हर समय प्रकट होती है। सूरदास ने अपनी रचनाओं से न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय संस्कृति और भक्ति आंदोलन को भी एक नई दिशा दी।

सूरदास का महाकाव्य कला–पक्ष की दृष्टि से अत्यधिक मूल्यवान है। उनकी कविताओं में भक्ति, प्रेम और समर्पण का अद्भुत संगम है। उनका काव्य न केवल धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वह साहित्यिक, सांस्कृतिक और कला की दृष्टि से भी एक अमूल्य धरोहर है। सूरदास की रचनाएँ हिंदी साहित्य में न केवल भक्तिरस की उत्कृष्टता का प्रतीक हैं, बल्कि वे कला और शिल्प के उच्चतम स्तर को भी व्यक्त करती हैं।

संदर्भ सूची

[1]. प्रीति झा Jagran, 2013, https://www.jagran.com/spiritual/sant-saadhak-poet-surdas&10393417.html.
[2]. Richard, A., Williams. 1. Poems to the Child-God: Structures and Strategies in the Poetry of Sūrdās. By Kenneth E. Bryant. Berkeley: University of California. Press, 1979-1978:16:247. Glossary, Bibliography, Index. $12. 50. The Journal of Asian Studies, doi: 10.1017/S0021911800141324
[3]. John Stratton Hawley. 7. Three Bhakti Voices: Mirabai, Surdas, and Kabir in Their Times and Ours, 2005.
[4]. John Stratton Hawley. 3. Three Bhakti Voices: Mirabai, Surdas, and Kabir in Their Times and Ours, 2005.
[5]. Vijay Mishra. 4. Devotional poetics and the Indian sublime, 1998.